अल्पा बहुत्व नु द्वार ना, अठाणु ९८ प्रकार

संकलनकर्ता मूथा शान्तिलाल बख्तावरमलजी
मंत्री, श्री भूपेन्द्रसूरि साहित्यसमिति, आहोर...

१. सर्व थकी थोड़ा गर्भज मनुष्य संख्याती कोडा कोडी प्रमाण छे ते मोटे अल्प छे।

२. उससे मनुष्यनी स्त्री संख्यातगुणी अधिक छे एटले सत्यावीस गुणी छे ए बोल मली अढी द्वीप मांहेला एकसो ने एक क्षेत्रना मनुष्यनी संख्या कहे छे (७९२८८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९५०३३६) एटले सात क्रोड कोडा कोडी बांणु लाख कोडा कोडी कोडी अठ्यासी हजार कोडा कोडी कोडी एक सो कोडा कोडी कोडी बासठ कोडा कोडी कोडी एकावन लाख कोडा कोडी बेतालीस हजार कोडा कोडी ससो कोडा कोडी तेतासीस कोडा कोडी, साडातीस लाख कोडी उगणसाठ हजार कोडी तणसो कोडी चोपन कोडी उगणचालीस लाख पसास हजार तण सो ने छत्तीस एटली संख्या ये मनुष्य छे तेना अठावीस भाग करीये नेमा एक भाग जीतने मनुष्य है और सतावीस भाग जीतनी स्त्रीयो है।

३. उससे बाहर तेउकाय पर्याप्ता असंख्यात् गुणा एक आवलीका ना समय नो वर्ग करी तेने कांइक न्यून आवलीका ना समय साथे गुणेन पर जितने समय थाय उतने हे।

४. उससे अनुत्तर विमान वासी देवो असंख्यात गुणा है क्षेत्र पल्योपम ने असंख्यात ये भागे जितने आकाश प्रदेश होय उतने है।

५. उससे उपर के तीन ग्रैवेयक के देवता संख्यात गुणा है ।

६. उससे मध्य भाग के ग्रैवेयक ना देवो संख्याता है।

७. उससे नीचे के तीन ग्रैवेयक के देवता संख्यात गुणा है।

८. उससे अच्युत देवलोकना देवता संख्यात गुणा है।

९. उससे आरण्य देवलोकना देवता संख्यात गुणा है।

१०. उससे प्राणत देवलोकना देवता संख्यात गुणा है।

११. उससे आनत देवलोकना देवता संख्यात गुणा है।

१२. उससे सातमी नरक पृथ्वीना नारकी असंख्यात गुणा है। घनीकृत लोकनी एक श्रेणीना असंख्यात भाग जीतने आकाश प्रदेशनी राशि है उतनी संख्या में है।

१३. उससे छठी नरक पृथ्वीना नारकी असंख्यात गुणा है क्योंकि नरकावासा ज्यादा है, क्योंकि उत्कृष्ट पापी जीवों से हीन पापी जीव ज्यादा होते हैं, इसलिए यहाँ पैदा होते हैं।

१४. उससे सहस्त्रार देवलोकना देवता असंख्यात गुणा है।

१५. उससे महाशुक्र देवलोकना देवता असंख्य गुणा है, क्योंकि वहाँ विमान ज्यादा हैं।

१६. उससे पांचमी नरक पृथ्वी ना नारकी असंख्यात गुणा है।

१७. उससे लोतक देवलोकना देवता असंख्यात गुणा है।

१८. उससे चौथी नारक पृथ्वीना नारकी असंख्यात गुणा है।

१९. उससे ब्रह्म देवलोकना देवता असंख्यात गुणा है।

२०. उससे भीजी पृथ्वीना नारकी असंख्यात गुणा है।

२१. उससे माहेन्द्र देवलोकना देवता असंख्यात गुणा है।

२२. उससे सनत कुमार देवलोकना देवता असंख्यात गुणा है।

२३. उससे बीजी शर्करा प्रभा नरक पृथ्वीना नारकी असंख्यात गुणा है।

२४. उससे संमूर्च्छिम् मनुष्य असंख्यात गुणा है। अंगुलप्रमाण क्षेत्र प्रदेश रासि सम्बन्धी बीजा वर्ग मूल ने प्रथम मूल साथे गुण करें तो जितने प्रदेश होते हैं उतने है।

२५. उससे इशान देवलोकना देवता असंख्यात गुणा है। अंगुल मात्र आकाश क्षेत्रनी प्रदेश राशि सम्बन्धी बीजो वर्गमूल जिसको त्रीजा वर्गमूल साथे गुण ने पर जितने प्रदेश होते हैं, उससे घनीकृत एक प्रदेश की श्रेणी लेनी उससे जितने आकाश प्रदेश होते हैं, उतने ईशान देवलोक के देवता होते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६. उससे ईशान देवलोक में रहने वाली देवियाँ बत्तीस गुणी ज्यादा है।

२७. उससे सौधर्म देवलोकना देवता संख्यात गुणा है, क्योंकि वहाँ विमान ज्यादा हैं और दक्षिण दिशा में कृष्णपक्षी जीव ज्यादा हैं।

२८. उससे सौधर्म देवलोकनी देवियो बत्रीस गुणी है।

२९. उससे भवनपति देवता असंख्याता है।

३०. उससे भवनपति नी देवीयो बत्तीस गुणी है।

३१. उससे रत्नप्रभानामा नरक पृथ्वीना नारकी असंख्यात है।

३२. उससे खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यन्च योनिया पुरुष असंख्यात गुणा है।

३३. उससे खेचर योनि तिर्यन्च पंचेन्द्रिय स्त्रीयो तीन गुणी है।

३४. उससे स्थलचर पंचेन्द्रिय योनिना पुरुष संख्यात गुणा है।

३५. उससे स्थलचर पंचेन्द्रिय योनिनी स्त्रीयो तीन गुणी है।

३६. उससे जलचर पंचेन्द्रिय योनिना पुरुष संख्याता है।

३७. उससे जलचर पंचेन्द्रिय योनिनी स्त्रीयो तीन गुणी है।

३८. उससे व्यन्तर निकायना देवो संख्यात गुणा है।

३९. उससे व्यन्तर निकायनी देवीयो बत्तीस गुणी है।

४०. उससे ज्योतिष देवता संख्यात गुणा है।

४१. उससे ज्योतिषी देवीयो बत्तीस गुणी है।

४२. उससे खेचर योनिना पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च नपुंसक संख्यात गुणा है।

४३. उससे स्थलचर तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय योनिना नपुंसक संख्यात गुणा है।

४४. उससे जलचर तिर्यन्च पंचेन्द्रिय योनिना नपुंसक संख्यात गुणा है।

४५. उससे चतुरिन्द्रिय पर्याप्ता संख्यात गुणा है।

४६. उससे सर्व पंचेन्द्रिय पर्याप्ता विशेष अधिक है।

४७. उससे बेइन्द्रिय प्रर्याप्ता विशेष अधिक है।

४८. उससे तेइन्द्रीय प्रर्याप्ता विशेष अधिक है।

४९. उससे पंचेन्द्रिय अपर्याप्ता विशेष अधिक है।

५०. उससे चतुरिन्द्रिय अपर्याप्ता विशेष अधिक है।

५१. उससे तेइन्द्रीय अपर्याप्ता ज्यादा है।

५२. उससे बेइन्द्रिय अप्रर्याप्ता ज्यादा है।

५३. उससे प्रत्येक शरीर वाला बादर द वनस्पति कायना अपर्याप्ता असंख्यात गुणा है। एक प्रभूत प्रतरमां अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण जितने सूची खंड होते हैं उतने हैं।

५४. उससे बादर निगोद पर्याप्ता अनंत कायना शरीर असंख्यात गुणा है, जिस लिए संख्याता प्रतरमां एक अंगुल ने असंख्यात जैसे जितने सूची खंड में समा सकते हैं, जितने खंड प्रमाण है।

५५. उससे बादर पृथ्वीकायना पर्याप्ता जीव असंख्यात गुणा है, जिससे प्रभूत संख्याता प्रतर मध्य में अंगुल ना असंख्याता भाग मात्र सूची खंड जितने समा सकते उतने हैं।

५६. उससे बादर अपकाय के पर्याप्ता असंख्यात गुणा है, जिससे अत्यंत प्रभूत संख्याता प्रतर मध्य में अंगुलना असंख्य भाग जितने सूची खंड में समा सकते हैं जितने हैं।

५७. उससे बादर वायु काय के पर्याप्ता जीव असंख्यात गुणा है घनीकृत लोकना असंख्याता प्रतरने विषे जितने आकाश है उतने प्रदेश प्रमाण में है।

५८. उससे बादर तेउकाय के अपर्याप्ता असंख्य गुणा है, जिससे असंख्याता लोकाकाश प्रदेश राशि प्रमाण है।

५९. उससे प्रत्येक शरीर वाला बादर वनस्पति के अपर्याप्ता जीव असंख्यात गुणा है।

६०. उससे बादर निगोद के अपर्याप्ता ना शरीर असंख्यात गुणा है।

६१. उससे बादर पृथ्वी काय के अपर्याप्ता असंख्यात गुणा है।

६२. उससे बादर अपकाय के अपर्याप्ता असंख्यात गुणा है।

६३. उससे बादर वायुकाय के अपर्याप्ता असंख्यात गुणा है।

६४. उससे सूक्ष्म तेउकाय के अपर्याप्ता असंख्यात गुणा है, क्योंकि सर्वलोकव्यापी है।

६५. उससे सूक्ष्म पृथ्वीकाय के अपर्याप्ता विशेषाधिक है।

६६. उससे सूक्ष्म अपकाय के अप्रर्याप्ता विशेषाधिक हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६७. उससे सूक्ष्म वायुकाय के अपर्याप्ता विशेषाधिक है।

६८. उससे सूक्ष्म तेउकाय के पर्याप्ता संख्यात गुणा है। यहाँ ये सूक्ष्म मध्य स्वभावे क्योंकि अपर्याप्ता भी पर्याप्ता से घणा है।

६९. उससे सूक्ष्म पृथ्वीकाय के अपर्याप्ता असंख्य गुणा है।

७०. उससे सूक्ष्म अपकाय के पर्याप्ता विशेषाधिक है।

७१. उससे सूक्ष्म वायुकाय के पर्याप्ता विशेषाधिक है।

७२. उससे सूक्ष्म निगोद ना शरीर अपर्याप्ता असंख्यात गुणा है।

७३. उससे सूक्ष्म निगोदना शरीर पर्याप्ता संख्यात गुणा है।

७४. उससे अभव्य सिद्ध के जीव अनंतगुणा है, क्योंकि जघन्य युक्त चौथा अनंता जितने है।

७५. उससे पडिवाइ प्रतिपति सम्यग् दृष्टि जीव अनंत गुणा है।

७६. उससे सिद्धना जीव अनंत गुणा है क्योंकि मध्य युक्त पांचमा अनंता जितने हैं।

७७. उससे बादर वनस्पतिकाय के पर्याप्ता जीव अनंत गुणा है, क्योंकि जे महि एक निगोद ने अनंतमे भाग में सिद्ध है क्योंकि एक असंख्याता बादर वनस्पति में है।

७८. उससे बादर पर्याप्ता जीव विशेषाधिक है। बादर पर्याप्ता पृथ्वी कायादि प्रक्षेपवा से।

७९. उससे बादर वनस्पतिकाय के अपर्याप्ता असंख्यात गुणा है, क्योंकि एकेक बादर निगोद पर्याप्तानी निश्चयि असंख्याता पर्याप्ता निश्चेय होते है।

८०. उससे बादर पर्याप्ता विशेषाधिक है। बादर पर्याप्ता पृथ्वी कायादिक प्रक्षेपवा थकी।

८१. उससे सर्व पर्याप्ता बादर जीव विशेषाधिक है।

८२. उससे सूक्ष्म वनस्पतिकाय के अपर्याप्ता असंख्य गुणा है, इसलिए कि बादर जीवों से सूक्ष्म ज्यादा है, क्योंकि सर्वलोकव्यापी है।

८३. उससे सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाधिक है, इसलिए कि सूक्ष्म अपर्याप्ता पृथ्वी कायादिक ने उसमें प्रक्षेपवा से विशेष अधिक होते हैं।

८४. उससे सूक्ष्म पर्याप्ता वनस्पतिकाय के जीव संख्यात गुणा है, क्योंकि सूक्ष्म पर्याप्ता मोहे सूक्ष्म अपर्याप्ता मोहे सूक्ष्म अपर्याप्ता स्वभावे सदेव संख्याता गुणा प्राप्त है।

८५. उससे सर्वसूक्ष्म पर्याप्ता जीव विशेषाधिक है, क्योंकि सूक्ष्म पर्याप्ता पृथिव्यादिक साथे मिलाने से।

८६. उससे सर्वपर्याप्ताअपर्याप्ता सूक्ष्म जीव विशेषाधिक है।

८७. उससे भव्य सिद्धक भव्य जीव विशेषाधिक है, इसलिए जघन्य युक्त अनंता प्रमाण अभव्य जीव है, क्योंकि उसको छोड़कर बीजा सब भव्य जीव है।

८८. उससे निगोद के जीव विशेष अधिक है, क्योंकि निगोद के जीव छोड़कर बीजा सब जीव असंख्यात लोकालोक प्रदेश प्रमाणज है।

८९. उससे वनस्पति के जीव विशेषाधिक है। निगोदमां प्रत्येक वनस्पति प्रक्षेपवा से।

९०. उससे एकेन्द्रिय जीव विशेषाधिक है। वनस्पति में प्रथिव्यादिकना प्रक्षेपवा से।

९१. उससे तिर्यञ्च योनि के विशेष अधिक है। बेइन्द्रियाहि के मिलाने से।

९२. उससे मिथ्या दृष्टि विशेषाधिक है, क्योंकि ए जीव चारे गति मो मले छे।

९३. उससे अविरती जीव विशेषाधिक है, अविरती सम्यग् दृष्टि जीव इसमें मिलने से।

९४. उससे सकषायी जीव विशेषाधिक है, क्योंकि उसमें देश विख्यात है।

९५. उससे छद्मस्थ जीव विशेषाधिक है, क्योंकि उपशांत मोही पण इसमें मिले है।

९६. उससे संयोगी विशेषाधिक है, क्योंकि उसमें संयोगी केवली मिले है।

९७. उसमें सर्व संसारी जीव विशेषाधिक है, क्योंकि इसमें अयोगी केवली भी मिले है।

९८. उससे सर्व जीव विशेषाधिक है। इसमें सिद्धना जीव भी शामिल है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मनुष्य क्षेत्र के बहार ये पदार्थ नहीं होते है

नदी, द्रह, बादल, बादलनो गर्जारव, बादर अग्निकाय, तीर्थंकर, बलदेव, वासुदेव, चक्रवर्ती और दूसरे भी सामान्य मनुष्य के जन्म-मरण तथा मुहूर्त प्रहर दिवस चन्द्र-सूर्य परिवेश बिजली, चय, अपचय और उपराग इतने पदार्थ पीस्तालीस योजन प्रमाण मनुष्य क्षेत्र में होते हैं।

यहां अढीद्वीप में पीसतालीस लाख योजन भूमि में वीस लाख योजन समुद्रनी भूमि है, जहाँ समुद्र नी भूमि में मनुष्य नहीं है। मात्र अन्तर द्वीप है। वे थोड़े है तेनी विपक्षा नहीं करते है, इसलिए समुद्र नी भूमि रहित मात्र द्वीप नी पचीच लाख योजन भूमि है, उसको एक भाग में आइ हुई पूवोक्त हाथनी राशि से गुणा करने पर (९०९९५८१८८३४९९९९४९५ ९९८२ ५०००००) इतनी राशि होती है, ये भी उगण भीश अंक है। ये भी उपर के सात कोडा कोडी गर्मज मनुष्य के २९ आंक के राशि में भाग देने पर एक मनुष्य के भाग में एक हाथ भूमि भाग आता है। उसमें सो ना बैठ नहीं सकते और भी पर्वत द्रह नदी वन अटवी आदि बिना मनुष्य वाली जमीन भी बहुत छूट जाती है और थोड़ी भूमि में मनुष्य रहते हैं, इसलिए पूर्वोक्त संख्या में मनुष्य इतनी जमीन में समा सकते नहीं यह शंका होती है।

उसका समाधान नीचे मुजब है, इसलिए वीतराग के वचन में कोई संदेह नहीं है। जो २९ आंक प्रमाण गर्भज मनुष्य कहे हैं, वे सदा सर्वदा काल में इतने दूज है, मगर कम-ज्यादा नहीं, इसका समाधान यह है कि पुरुष से स्त्रीयो सतावीस गुणा ज्यादा है और गर्भधारण करने वाली ये ही हैं और उसके गर्भ में उत्कृष्ट से नव लाख संख्या ये पण गर्मज मनुष्य होते है और जघन्य मध्यम पण होते हैं और स्त्रीनी राशि ज्यादा है, इसलिए उनके गर्भ में गर्भज मनुष्योंनि संख्या सर्वदा होती है। इसलिए गर्भ में ज्यादा जीव होने चाहिए और स्वल्प जीव गर्भ के बाहर होते है। इसलिए जीव पृथ्वी में सुख से रह सकते है। ऐसा कहने से जैवक्रिया का लोप नहीं होता है और केवली कहे ते सत्य जानना चाहिए। पढ़ना, चिंतन करना और पूछना इसका नाम त्रिपक्षी विद्या कहते हैं। जगत में त्रिपक्षी विद्या नी कहेवत है, उससे संशयक बातों का समाधान होता है।

स्वर्ग, मृत्यु और पाताल लोक में शाश्वत जिन-चैत्य और जिन-प्रतिमाजी का विवरण

स्थान	चैत्य में प्रतिमाजी	प्रासाद	प्रतिमाजी
सौधर्म	१८०	बत्तीस लाख	सतावन करोड़ साठ लाख
ईशान	१८०	अट्ठाईस लाख	पचास करोड़ चालीस लाख
सन्तकुमार	१८०	बारह लाख	इक्कीस करोड़ साठ लाख
महेन्द्र	१८०	आठ लाख	चौदह करोड़ चालीस लाख
ब्रह्म	१८०	चार लाख	सात करोड़ बहत्तर लाख
लांतक	१८०	पचास हजार	नब्बे लाख (९०)
शुक्र	१८०	चालीस हजार	बहत्तर लाख (७२)
सहस्त्रार	१८०	छः हजार	दस लाख अस्सी हजार
आनत	१८०	दो सौ	छत्तीस हजार
प्राणत	१८०	दो सौ	छत्तीस हजार
आरण्य	१८०	एक सौ पचास	सत्ताईस हजार
अच्युत	१८०	एक सौ पचास	सत्ताईस हजार
प्रथमत्रिक	१२०	एक सौ ग्यारह	तेरह हजार तीन सौ वीस
द्वितीयत्रिक	१२०	एक सौ सात	बारह हजार आठ सौ चालीस
तृतीयत्रिक	१२०	एक सौ	बारह हजार
पंचानुत्तर	१२०	पाँच	छह सौ
		८४९७०२३	१५२९४४७५०

राजेन्द्रकोष में यह पाठ है

नंदिसरे बावन जिनहरा, सुरगिरिसु तह असीई
कुंडल नगमणुसुत्तर रुअग वलए सु चउ चउरो
उसु यारेसु चत्तारि असीई व स्खार पव्वयेसु तहा।
वे अट्ठे सत्तरिसय तीस वासहर सेलेसु
वीसं गयदंतेसु दस जिण भवणाइ कुरु नगरवरे
एवं च तिरियलोए अडवणा हुंति सयचउरो ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिर्च्छा लोक में चैत्य व जिन प्रतिमा जी

		प्रासाद	१ में प्रतिमा	
५	मेरु पर्वत	८५	१२०	१०२००
२०	गजदंतगिरी	२०	१२०	२४००
८०	वरकारा पर्वत	८०	१२०	९६००
१०००	कंचनगिरि	१०००	१२०	१२००००
५	विचित्र पर्वत	५	१२०	६००
५	चित्र पर्वत	५	१२०	६००
१०	यमक पर्वत	१०	१२०	१२००
३०	वर्षधर पर्वत	३०	१२०	३६००
४	इक्षुकार पर्वत	४	१२०	४८०
२०.	वृत वैताड्य	२०	१२०	२४००
१६०	दीर्घ वैताड्य	९६०	१२०	२०४००
४०	दिग्गज कूट	४०	१२०	४८००
१०	जेम्बयादिवृक्ष	११६०	१२०	१४०४००
३८०	कुंड	३८०	१२०	४५६००
७०	महानदी कुंड	७०	१२०	८४००
८०	द्रह चैत्य	८०	१२०	९६००
	मानुषोत्तर पर्वत	४	१२०	४८०
	नदीश्वर द्वीप	५२	१२४	६४४८
	"	१६	१२०	१९२०
	सूचक द्वीप	४	१२४	४९६
	कुन्डल द्वीप	४	१२४	४९६
अठी द्वीप के नकशे की पुस्तक से		३२४९		३९०१२०

जबकि सकलतीर्थ में ३२५९ का पाठ है : ३९१३२०

नंदीश्वर द्वीप	५२	मानुषोत्तर पर्वत	४
सूचक द्वीप	४	वृक्षाकार	४०
कुन्डल द्वीप	४	वैताड्य	१७०
इक्षुकार	४	कुलगिरि	३०
पर्वत		गजदंत	२०
मेरु पर्वत	८०	जंबूवृक्षशालि वृक्ष	१०

राजेन्द्र कोश में यह पाठ है बाकी केवलीगम्य ४५८

पाताल लोक में भुवनपति में

स्थान	प्रासाद	प्रतिमाजी
१. असुर कुमार	चौंसठ लाख	एक सौ पन्द्रह करोड़ बीस लाख
२. नागकुमार	चौंरासी लाख	एक सौ इक्यावन करोड़ बीस लाख
३. सुवर्ण कुमार	बहत्तर लाख	एक सौ उगणतीस करोड़ साठ लाख
४. विद्युत कुमार	छियत्तर लाख	एक सौ छत्तीस करोड़ अस्सी लाख
५. अग्नि कुमार	छियत्तर लाख	एक सौ छत्तीस करोड़ अस्सी लाख
६.द्वीप कुमार	छियत्तर लाख	एक सौ छत्तीस करोड़ अस्सी लाख
७. उदधिकुमार	छियत्तर लाख	एक सौ छत्तीस करोड़ अस्सी लाख
८. दिशा कुमार	छियत्तर लाख	एक सौ छत्तीस करोड़ अस्सी लाख
९. स्तनित कुमार	छियत्तर लाख	एस सौ छत्तीस करोड़ अस्सी लाख
१०. वायु कुमार	छियानवे लाख	एक सौ छत्तीस करोड़ अस्सी लाख
	७७२०००००	३८९६००००००

एक-एक प्रसाद में

१८० प्रतिमाजी है सात करोड़ बहत्तर लाख तेरह सौ नबासी करोड़ साठ लाख

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org